आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 281 | ARYA SABHA MAURITIUS | 1st Jan. to 17th Jan. 2014

Le Yajna nous est éternellement bénéfique

Om ! Svaryanto nāpekshanta ā dhyām – rohanti rodassi.
Yajyam yé vishwatodhāram suvidwānso viténiré.

Yajur Véda 17/68

Glossaire / Shabdārtha :

Yé – celui ou celle

Suvidwānsaha – un yogi, un très grand sage, un savant, **Yantaha** – qui pratique le yoga en observant strictement toutes les règles ou disciplines y relatives, **Na** – tout comme, **te** – il/elle, **Swaha** – beaucoup de bonheur, grande prospérité, confort extrême, béatitude, **na apekshaté** – ne désirant aucun avantage ou gain personnel, **Vishwatodhāram** – celui qui a acquis une parfaite compétence intellectuelle et spirituelle, **Yajyam** – peut accomplir toutes les exigences du yajna, **Viténiré** – celui qui pratique le yajna avec beaucoup de dévouement et de piété atteint la félicité éternelle ('Moksha' en Hindi), **Rodassi** – le ciel et la terre, **ā rohanti** – peut atteindre l'autre monde ('la félicité éternelle' ou 'la mort') quand il le veut,
Dhyām – (i) connaissance étendue dans le domaine de Yoga
(ii) l'atmosphère, l'espace

Interprétation / Anushilan

Le Yajna est le symbole du désintéressement, voire la renonciation de l'égoïsme. Les mots 'Swāhā' et 'idanna mama' font état de l'importance de cette attitude positive mentionnée plus haut.

Autant que l'on adopte la culture de 'swāhā (swa + ā + hā) c'est-à-dire, l'abnégation (self sacrifice) dans sa vie, autant cela éveillera en nous le sentiment de la fraternité universelle.

C'est bien cette attitude qui amène la paix, le bonheur et la prospérité dans le monde. Le salut de l'homme se trouve dans l'abnégation et dans le service à l'humanité.

Le Yajna a un impact positif sur la société, et la dirige vers le progrès. Cette pratique engendre la moralité, le piété, le sacrifice de son égo, la serviabilité, la générosité et l'autosuffisance.

Cette action (Le Yajna) nous est bénéfique de plusieurs autres façons :
(i) Elle nous aide à acquérir une maîtrise parfaite de soi. (self-control)
(ii) Elle donne lieu à l'harmonie et au bonheur dans la famille.
(iii) Elle contribue à l'assainissement et au progrès de la société.
(iv) Elle éveille l'élan de patriotisme parmi le peuple.
(v) Elle nous unit à Dieu et purifie notre âme.
(vi) Elle a un effet positif sur la nature car elle épure l'atmosphère et rend l'environnement sain.

En somme, le Yajna est la source de toute prospérité et de la réussite dans la vie et ouvre la voie à la félicité éternelle ('Moksha' en Hindi). Le Yajkartā (celui qui pratique le Yajna) sera toujours à l'abri du besoin et bénéficiera continuellement du bonheur éternel.

N. Ghoorah

मकर संक्रान्ति

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

'मकर संक्रन्ति' एक धार्मिक पर्व है, जिसका सम्बन्ध सूर्य से है। धर्म हमें बताता है कि परमात्मा सृष्टिकर्ता है। तत्वदर्शी ऋषि-मुनि इस विचित्र सृष्टि को देखकर उसके रचयिता को नमन करते रहे हैं। अज्ञानी पुरुष रचयिता को नहीं, रचना की पूजा-अर्चना में ही अपना अनमोल मानव जीवन गँवा देते हैं। वे जीवन-दायिनी गंगा को बहते देख उसकी पूजा में फल-फूल चढ़ाने लगते हैं। अग्नि-पुँज सूर्य के तेज को देखकर अर्घ देने लगते हैं। वे मकर संक्रान्ति में भी सूर्य का ही आराधन करते हैं। अज्ञानवश सूर्य के निर्माता, परमेश्वर की उपासना कर ही नहीं पाते।

हमारे ऋषि-महर्षि सूर्योदय होते ही अग्निहोत्र करते थे। उनके कंठ से सूर्यदेव सच्चिदानन्द परमात्मन् के उपासनापरक मन्त्र गूँज उठते थे। यथा -

ओ३म् सूर्यो ज्योति ज्योर्ति सूर्यः स्वाहा ।
ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा ।
ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।
ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजू रुषसेन्द्रवत्या।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।

परमेश्वर का नाम 'सूर्य' इसलिए है, क्योंकि वह चराचर सब जगत् की आत्मा है और सब आत्माओं में प्रकाश करने वाला है। वह अपने प्रकाश से सूर्यलोक को प्रकाशित करके उसे धारण करता है। वह परमेश्वर वेद वाणी से ज्ञान का प्रकाश करता है। सब जगत् को ज्ञान देने वाले उस प्रभु के लिए हम होम में आहुतियाँ अर्पित करते हैं।

आकाशस्थ सूर्य की गति को ज्योतिष विद्या के माध्यम से जाना जाता है। यह विद्या गणित पर आधारित है, जिससे आकाशस्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है। अज्ञानी जन ज्योतिष विद्या को 'फलित विद्या' समझते हैं।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

वर्ष २०१४ का शुभारम्भ

साल २०१३ की समाप्ति के बाद पहली जनवरी से नूतन वर्ष में पदार्पन करते हुए हम आनन्दित हैं । बड़े प्रेम और उत्साह पूर्वक अपने हित, मित्र और पड़ोसियों के लिए मंगलकामना का संदेश भेंट कर चुके हैं। हमारी यही अभिलाषा है कि यह नूतन वर्ष सभी नागरिकों के लिए मंगलकारी हों, इस देश की जनता सुख-समृद्धि की ओर अग्रसर हों। बिते हुए वर्षों से इस वर्ष अधिक प्रगति करेंगे, तभी नया साल सार्थक सिद्ध होगा।

नूतन वर्ष के आरम्भिक काल ही में नवीन विचारों और योजनाओं के साथ जीवन में कड़ी मेहनत करना हर एक व्यक्ति का परम उद्देश्य है। अपने ज्ञान, अनुभव और श्रम के आधार पर उन्नति की ओर बढ़ना आवश्यक है, अन्यथा समय, आगे बढ़ता जाएगा और हम पीछे पड़कर पछताते रहेंगे। आज प्रत्येक व्यक्ति को बड़े सोच-विचार द्वारा अनमोल समय का सदुपयोग करना चाहिए, तभी हम समायानुकूल जिन्दगी की गाड़ी आगे बढ़ाते जा पाएँगे।

हम बड़े तप-त्याग, ईमानदारी और सद्व्यवहारों के साथ अपने-अपने कार्यक्षेत्र में खरा उतरेंगे तो अवश्य ही एक श्रेष्ठ नागरिक कहलाने के अधिकारी होंगे। अपनी बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक शक्ति के आधार पर उन्नतिशील होंगे, अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के हित में पूरा योगदान के हकदार होंगे।

प्रिय पाठको ! समय गतिमान होता है। उसका उचित उपयोग करना हमारा परम कर्त्तव्य है। समय के अनुसार मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करता है। वह समय पर उठता और सोता है। वह प्रातःकाल सूर्योदय से पहले जागता है, दिवसकाल में कार्यरत रहता है, सायंकाल घर लौटने पर सूर्यास्त के बाद रात्रि में आराम से सोता है, अगर वह अमूल्य समय का सदुपयोग नहीं करेगा तो गतिमान समय उसकी प्रतीक्षा नहीं करेगा, वह आगे बढ़ता जाएगा और इंसान पीछे रह जाएगा। चतुर आदमी कभी भी समय का दुरुपयोग नहीं करता है, उसका पालन करना, अपना परम उद्देश्य समझ कर जीता है। जो भी समझदार आदमी समय का सही उपयोग करके जीता है वह सफलता के पथ पर अग्रसर होता जाता है।

पाठकवृंद ! समय तो कभी किसी के लिए ठहरता नहीं, वह हर पल आगे बढ़ता जाता है। ज़िदगी में जब सुनहरा समय प्राप्त होता है तो वह फिर कभी लौट कर नहीं आता है। अवसर हाथ से निकल जाने पर फिर वह कभी हाथ नहीं आता है, इसीलिए समय का पालन करना हमारा धर्म है।

परमात्मा की कृपा से सभी प्राणियों को बराबर समय प्राप्त है। न किसी को अधिक, न किसी को कम। समय को यों ही व्यतीत करके जीना मूर्खता का प्रमाण है। वक्त का लिहाज़ न करने वाले नादान आदमी ज़िदगी में कामयाब नहीं होते हैं। समय तो उन्हें दस्तक देने आता है और चला जाता है परन्तु वे उसका लाभ उठा नहीं पाते। प्रायः यह देखा गया है कि समय का ख्याल न करने वाले लोगों की मनोभावनाएँ दबकर रह जाती हैं और वे कर्महीन दीखते हैं। वे वक्त गवाँते हुए काल की चपेट में आकर एक दिन दुनिया से बिदा हो जाते हैं और दुनिया वाले कहते हैं कि उनका समय आ गया, इसीलिए वे संसार छोड़ कर चले गए।

हम विश्व के सर्वश्रेष्ठ प्राणी माने जाते हैं। ईश्वर ने हमें इस अनमोल समय का सदुपयोग करने की बुद्धि दी है। हमें बुद्धिमता पूर्वक अपनी दिनचर्या बनाकर समय का पूरा उपयोग करना चाहिए।

समय के अनुसार २०१३ का साल गुज़र गया, वह हम से सदा के लिए बिदा हो गया, अब २०१४ का वर्ष अपनी कदम समय के आधार पर आगे बढ़ाता जा रहा है। आर्य सभा की ओर से यही कामना करते हैं कि यह नया वर्ष हमारे लिए मंगलकारी हो हर एक रोज़ शुभ दिन साबित हो। गत वर्ष से अधिक हम अपने पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रगति करने में सफल हों। भौतिक और आध्यात्मिक रूप से उन्नति के शिखर पर पहुँचते जाएँ। हमारी शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्ति हमारे जीवन में अवश्य नया रंग लाएगी।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि किसी आतंकवादी की नज़र हमारे देश पर न पड़े। कोई संक्रात्मक रोग यहां न फैलें, हम प्राकृतिक प्रकोप का शिकार न हो। हम सभी नागरिकों में पारस्परिक प्रेम स्थापित हों और एक दूसरे के सहयोग से मंगलमय हों। पूर्णाशा है कि बड़े हर्षोल्लास के साथ प्रगति करते हुए इस वर्ष को भी पूरा करेंगे और वर्ष २०१५ के स्वागत की तैयारी करेंगे ।

बालचन्द तानाकूर

मकर संक्रान्ति

पृष्ठ १ का शेष भाग

ज्योतिषियों ने बताया है कि सूर्य इस पृथ्वी से तिरानबे मिलियन मील की दूरी पर है। वह आग का गोला है। पृथ्वी उसके चारों ओर घूमती है। जिस मार्ग से होकर पृथ्वी परिक्रमा करती है, उस मार्ग को 'क्रान्तिवृत्त' नाम दिया गया है। इस क्रान्तिवृत्त के बारह भाग हैं। एक भाग से दूसरे भाग में जाना 'संक्रान्ति' कहलाता है। क्रान्ति-वृत्त में स्थान-स्थान पर नक्षत्रों का एक-एक ढेर दिखाई देता है, जिसे 'राशि' कहते हैं। चूँकि इन राशियों की आकृतियाँ अलग-अलग दिखाई देती हैं, इसिलए इनके पृथक-पृथक बारह नाम दिये गए हैं, यथा - पहली है – **'मेष'**, राशि। मेष भेड़े को कहते हैं। इस राशि में नक्षत्र-समूह भेड़े के समान दिखाई देता है।

दूसरी राशि है – **'वृष'**। वृष का अर्थ है – बैल अथवा साँड। वृष राशि की आकृति बैल जैसी है । तीसरी राशि है **'मिथुन'**। मिथुन का अर्थ है – एक स्त्री-पुरुष का जोड़ा। चौथी राशि है – **'कर्क'**- इसकी आकृति एक केकड़ा जैसी है। पाँचवी **'सिंह'** राशि है, छठी **'कन्या'** राशि, सातवीं **'तुला'** राशि, आठवीं **'वृश्चिक'** राशिं है । 'वृश्चिक' को अंग्रेज़ी में 'Scorpion' कहते हैं । नौवीं राशि है **'धनु'**, जो एक धनुष के समान है , दसवीं है **'मकर'** राशि, जिसे अंगेज़ी में 'Capricorn' कहते हैं। यह राशि मगरमच्छ की तरह दिखाई देती है। ग्यारहवीं है – **'कुम्भ'** राशि, जो मिट्टी का एक घड़ा जैसी दिखाई देती है। बारहवीं राशि है - **'मीन'**, जो मच्छली जैसी है।

जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में पहुँचती है तब कहा जाता है कि एक संक्रान्ति पूरी हुई। वर्ष में बारह संक्रातियाँ हैं। इन बारहों में से केवल मकर संक्रान्ति को ही पर्व के रूप में मनाते हैं।

मकर संक्रान्ति को विशेष महत्व इसलिए दिया जाता है, क्योंकि छः मास तक सूर्य क्रांतिवृत्त से दक्षिण की ओर उदय होता है और 'मकर राशि' से वह उत्तर की ओर उदय होने लगता है। इस छः महीने के समय को 'अयन' कहते हैं। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दाक्षिणायन' कहते हैं। जब से सूर्य उत्तरायण में दिखता है तब से दिन बढ़ना शुरू होता है और रात घटती जाती है। उत्तरायण में धरती पर सूर्य का प्रकाश बढ़ जाता है। ज्ञानी पुरुष इस प्रकाश के आधिक्य को अधिक महत्व देते हैं। 'उत्तरायण' को 'देवयान' भी कहते हैं। इसी देवयान में मकर संक्रान्ति को पर्व के रूप में मनाया जाता है।

जब पृथ्वी मकर राशि में पहुँचती है तब भारत में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। प्राकृतिक प्रकोप से बचने के लिए इस पर्व को मनाने के लिए ऋषि-मुनियों ने ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना, उपासना के द्वारा यज्ञ का विधान किया है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर यज्ञों का अनुष्ठान किया जाता है, जिसमें विशेष सामग्रियों की आहुतियाँ दी जाती हैं।

ऐसे अवसर पर दरिद्रनारायण को दान दिया जाता है। दान में विशेष कर गरम कपड़ा, कम्बल आदि होते हैं। घी, तिल का तेल, तिल के लड्डू आदि दान देते हैं। गीता का वचन है कि समय और पात्र को देखकर जो दान दिया जाता है, वही 'सात्विक दान' कहलाता है।

मकर संक्रांति के समय चूँकि सरदी पराकाष्ठा पर होतीहै, इसलिए इस सरदी से बचने के लिए गरम भोजन और गरम कपड़े की अत्यावश्यकता होती है। अतः अभावग्रस्त जनों को घी, तिल के लड्डू और कम्बल दान करने का विधान किया गया है।

उचित दान देना धर्म है। जो धर्म का पालन करता है, वही सुख का अधिकारी बनता है। हम सूर्य से दान करना सीखें। सूर्य सब को अपने प्रकाश और ऊर्जा का दान करता है। उस दान को पाकर संसार हरा-भरा हो जाता है। सबमें नवजीवन का संचार हो जाता है।

मकर संक्रान्ति का सन्देश है कि हम परमात्मा द्वारा रचित इस विशाल सृष्टि का ज्ञान प्राप्त करें और जन-जन के जीवन को सुखी बनायें। परमेश्वर की महिमा का गान करें और सच्चे आस्तिक बनें।

फूलों वाले पेड़

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

पर्यावरण को सुरक्षित किए हुए
सड़कों के किनारे
नदियों के छोरों पर
बगीचों में सर उठाए
फूलों वाले छायादार पेड़
सुगंध फैलाते हुए
मोहकता बाँटते हुए
बटोहियों को निहारने के लिए
चित्रकारों को चित्रांकन के लिए
कवियों को काव्य-सृजन के लिए
और नन्हे-मुन्नों को
उछल-उछल पुष्प पाने के लिए
विवश कर देते हैं ।

बसन्त आता
पतझड़ जाता
डालों पर लग जाते बौर
भ्रमर मंडराते सब ठौर
लदबद लगे देख फल
खाने को मन जाता मचल ।
खाते खुद नहीं
पर देते कितना
ये परोपकारी फूलों वाले
फलों वाले पेड़ ।

INTERNATIONAL ARYAN CONFERENCE : 2013

S/N	NAME	AMOUNT (Rs)
	Balance B/F	*550,377.00*
1.	PLAINE WILHEMS ARYA ZILA PARISHAD Solferino A S	425.00
2.	GRAND PORT ARYA ZILA PARISHAD Mare Tabac A M S	135.00
3.	FLACQ ARYA ZILA PARISHAD Camp de Masque Pave A S - c/o Mr V Beekhaye	1000.00
4.	PUROHITS - A S M Pta Premila Toofany	910.00
5.	MEMBERS Members of the public c/o Pta Chummun	3,250.00
	Mr Leckraj singh Ramdhony	2,200.00
	Members of the public c/o Pt J Muttra	1,720.00
	Ach Sannat Kumar	1,000.00
	Mrs Dabee Danshwaree	500.00
	Total	561,517.00

वेद का अनुपम सन्देश

डा० माधुरी रामधारी

ओ३म् । असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः ।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ।।

ये जनाः - जो जन, जो लोग, **आत्महनो** - आत्मा का हनन करते हैं, आत्मा के विरुद्ध आचरण करते हैं, **ते प्रेत्य** - वे लोग मरकर, **तान् अभिगच्छन्ति** - चले जाते हैं, पहुँच जाते हैं; कहाँ पहुँचते हैं?, **असुर्य्या** - जहां सूर्य का प्रकाश नहीं होता, **अन्धेन तमसाऽऽवृताः** - चहुँ ओर तमस, घनघोर अंधकार छाया होता है, अर्थात् आत्मा के विरुद्ध व्यवहार करने वाला मनुष्य जीते-जी अपने इस जीवन की दुर्गति तो करता है, परन्तु मृत्यु के बाद भी वह उन लोकों में, उन स्थानों में, उन शरीरों या उन योनियों में पहुँच जाता है, जो हमेशा अंधकार से आवृत्त होता है, जहाँ ज्ञान का प्रकाश कभी उदय ही नहीं होता।

वेदों में आस्था रखने वाले इसी एक मन्त्र के उपदेश से अपने सम्पूर्ण जीवन को सुखमय बना सकते हैं। धर्म सुख का मूल है। वेद इसी धर्म-मार्ग पर चलने का सन्देश देते हैं। धर्म आत्मा और परमात्मा का बोध कराता है। अन्धकार से वही बचता है, जो आत्मा का उद्धार करना जानता है और आत्मा का उद्धार वही करता है, जो शरीर के भीतर आत्मा का अस्तित्व पहचानता है, जो अपने आपको जानता है। एक नवजात शिशु जैसे-जैसे बड़ा होता है, वैसे-वैसे वह अपने माता-पिता को जानने लगता है, भाई-बहन को जानने लगता है। धीरे-धीरे वह पास-पड़ोस के लोगों को, हित-मित्रों को और सगे-सम्बन्धियों को जान लेता है। अपनों के साथ परायों को भी जान लेता है, परन्तु उम्र के अधिक बढ़ जाने के बाद भी वह अक्सर अपने आपको नहीं जानता, अपनी आत्मा को नहीं पहचानता।

आत्मा को पतन से बचाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि मनुष्य कौन है? शरीर है या आत्मा है? जब मूलशंकर स्वामी विरजानन्द की कुटिया के सामने पहुँचे और दरवाज़ा खटखटाया तब अंदर से आवाज़ आई – 'कौन है ?'

मूलशंकर ने उत्तर दिया – 'मैं यही जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ ।'

यह सुनकर स्वामी विरजानन्द ने तुरंत दरवाज़ा खोला। युवक मूलशंकर को अपने सामने खड़ा देखकर वे अपनी बन्द आँखों से उन्हें कुछ क्षण निहारते रहे। फिर कुटिया के भीतर लाकर उन्हें सामने बिठाया और कहा – *'सचमुच, मनुष्य नहीं जानता कि वह कौन है ? हरेक व्यक्ति स्वयं को इंद्रियों वाला शरीर मानकर इंद्रियों को ही सुख देने में लगा हुआ है।'*

मानव शरीर में हड्डी, मांस और इंद्रियों के अतिरिक्त एक आत्मा भी है। आत्मा के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण प्राण है। आत्मा के होने से ही शरीर में प्राण हैं। आत्मा के निकलते ही मिट्टी का बना शरीर पुनः मिटटी में मिल जाता है।

आत्मा के होने का दूसरा प्रमाण यह है कि जब भी मनुष्य बुरा करता है, भीतर से झाँकती आत्मा उसे सचेत करती है, सावधान करती है। आत्मा की आवाज़ सुनकर मनुष्य घबरा जाता है। चाहे बड़े से बड़ा आततायी क्यों न हो। निरपराध को सताते समय उसका भी हृदय काँपता है।

आत्मा ईश्वर की गुप्तचर है। यह गुप्तचर बुरे कामों में सहयोग नहीं देती। इसीलिए अनैतिक आचरण करने के बाद भी मनुष्य को आत्मग्लानि होती है। आत्मा ब्रह्म का स्वरूप है। वेद के अनुसार आत्मा में केवल ब्रह्म का अस्तित्व है। ब्रह्म ने संकल्प किया – **एकोऽहं बहु स्याम** – मैं एक से अनेक हो जाऊँ। इस संकल्प के बाद ईश्वर ने सृष्टि की रचना की और वे स्वयं सृष्टि में समा गए। एक ही प्राण सभी मनुष्यों के भीतर आत्मा के रूप में बस गए। यही आत्मा मनुष्य को सचेत करती है कि हे मनुष्य ! ज़रा सोच-विचार करके चलो। तुम्हारे सामने दो रास्ते हैं। तुम्हें चुनना है।

एक जो रास्ता है चमकीला,
उससे होता कभी न आत्मा का भला ।
जो रास्ता है पथरीला,
उसीसे होता है अपना भला ।

चमकीला रास्ता अंधकार की ओर ले जाता है। पथरीला रास्ता ही मनुष्य और उसकी आत्मा को ऊँचा उठाता है।

समझदार मनुष्य आत्मा की चेतावनी पाकर संभल जाता है, परन्तु नासमझ चमकीला मार्ग, संसार की चमक-दमक के आकर्षण में पड़कर आत्मा का हनन करता है। ऐसे मनुष्य को सावधान करते हुए वेद कहता है – **ये के चात्महनो जनाः** – जो जन आत्मा का हनन करते हैं, **ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति** – वे मृत्यु के बाद उन लोकों में चले जाते हैं, जहाँ असुर्य्या – सूर्य का प्रकाश नहीं होता, **अन्धेन तमसाऽऽवृताः** – गहन अंधकार होता है।

दुराचार के कारण आत्मा की ज्योति बुझ जाती है, आत्मा विकृत हो जाती है। उसके विकार फोड़े की तरह फूट निकलते हैं। इस अवस्था को मनुष्य अपना दुर्भाग्य मान लेता है और दुर्भाग्य का रोना रोते हुए अपने दुर्व्यवहार का परिणाम आज या कल या दस साल बाद या अगले जन्म में भुगतता है।

एक घर में दो बच्चे हैं। एक के पास दो आँखें हैं और दूसरा अंधा है। आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? एक व्यक्ति के पास धन का भण्डार है और दूसरे व्यक्ति के पास सूखी रोटी भी नहीं। एक विद्यार्थी पाठ को तुरंत याद कर लेता है और दूसरा कोशिश करने पर भी कुछ याद नहीं रख पाता। ऐसा क्यों होता है? वेद कहता है, जो आत्मा का हनन करता है – **प्रेत्याभिगच्छन्ति** – वह मरने के बाद वहाँ चला जाता है, जहाँ **तमसा**-दुख का अंधकार होता है। पुनर्जन्म से पाप-पुण्य का सारा भेद खुल जाता है।

अगर मृत्यु के बाद मनुष्य उस लोक में, उस शरीर या योनि में जाना चाहता है, जहाँ दुख न हो, अभाव या पीड़ा न हो, तो उसे वही व्यवहार करना है, जो आत्मा के अनुकूल है। जो कर्म आत्मा को प्रिय लगे, वही कर्म करते हुए आत्मा को तृप्ति तथा शांति प्रदान करती है।

तृप्ति और शांति ही सुख का प्रकाश है। मनुष्य सदा ही शांति चाहता है, परंतु अक्सर ही अपने ही हाथों आत्मिक शांति खो देता है। एक बार एक धार्मिक पुरुष ने महात्मा बुद्ध से पूछा –

'महात्मा जी, मैं दिन-रात ईश्वर का नाम लेता हूँ। पूजा-पाठ करता हूँ । मेरे पास किसी चीज़ की कमी नहीं है। आलीशान घर है, सुन्दर बंगला है, मोटर-गाड़ी, नौकर-चाकर सब है, परंतु मेरा मन बड़ा अशान्त रहता है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

काल-चक्र के संचालक

बालचन्द तानाकूर

ईश्वर सृष्टि कर्त्ता है। सृष्टि का उत्पत्ति और प्रलयकाल उसी के सामर्थ्य से होता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर परमात्मा के संचालन में घूमती है। सूर्योदय के बाद प्रातःकाल, दिवसकाल, सायंकाल और रात्रि उसी महान् शक्ति द्वारा आयोजित है।

समय गतिमान है। प्रभु की शक्ति से सेकेण्डों, मिनटों और घण्टों में वक्त गुज़रता जा रहा है। दिन के बाद रात गुज़रती जा रही है। सप्ताह, मास, वर्ष और शताब्दी व्यतीत हो रहे हैं। ऋतु परिवर्तन में तथा ग्रह-उपग्रहों में परमेश्वर के सामर्थ्य से गति होती है। आकाश मण्डल में सभी ग्रह नियमित रूप से गतिशील है। जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है, उसी प्रकार चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है।

ज्योतिष ज्ञान द्वारा हमें भूमण्डल और सौर्य मण्डल आदि के बारे में जानकारी होती रहती है। प्राचीन ज्योतिषियों ने ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों, राशियों आदि के बारे में अध्ययन करके यह बतलाया है कि सौर्य मण्डल में नौ मुख्य तारे होते हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं – सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु। बारह राशियाँ भी हैं जो इन नामों से जानी जाती हैं – मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

पृथ्वी में भी गति होती है। वह जिस पथ से सूर्य के चारों ओर घूमती है उसे क्रांतिवृत्त कहा जाता है। उस क्रांतिवृत्त पर पृथ्वी एक मास परिक्रमा करने के बाद एक राशि से दूसरी राशि पर जाती है। इसी तरह एक साल में १२ राशियों पर पहुँचकर बारह संक्रान्तियाँ पूरा करती है। इन संक्रान्तियों में मकर संक्रान्ति को विशेष महत्व दिया जाता है। इसीलिए हम इसे एक पर्व के रूप में बड़े उत्साह पूर्वक मनाते हैं।

मकर संक्रान्ति को **'सौर्य वर्ष'** कहा जाता है। इसी अवधि में पृथ्वी सूर्य के उत्तर में पहुँचती है और तब से धरती पर प्रकाश बढ़ जाता है। दिन लम्बे हो जाते हैं और रात छोटी। यह सौर्य वर्ष हर साल १४ जनवरी को होता है, क्योंकि अक्सर उसी समय पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक परिक्रमा पूरी करती है। उसी सौर्य वर्ष के दिन उत्तरायण आरम्भ होता है, याने कि सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर बढ़ जाता है।

कालचक्र के संचालक परमेश्वर की लीला अपरम्पार है, उसकी रचना अद्‌भुत है। उसकी महिमा का बखान करना असम्भव है। हमें उस सृष्टि करता का गुणगान करते रहना चाहिए। अपने घरों, मंदिरों या सामाजिक संस्थाओं में यज्ञ आदि का भव्य आयोजन करके बड़ी खुशी से पारस्परिक प्रेम-सहयोग के साथ मकर संक्रान्ति का आनन्द उठाना चाहिए। नए साल के शुभारम्भ में मकर संक्रान्ति हमारा प्रथम पर्व है, इसे बड़े भक्ति-भाव एवं उत्साह पूर्वक मनाना हमारा कर्त्तव्य है।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

एस. प्रीतम

यह सर्वमान्य है कि वैदिक मतावलम्बियों के बीच आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के तत्काल बाद स्वामी श्रद्धानन्द का नम्बर आया है क्योंकि उन्होंने स्वामी जी द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों को कार्य में परिवर्तित करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। जैसे वेद प्रचार, महिलाओं का उद्धार हिन्दी का प्रचार, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना, बाल-विवाह निषेध, पुनर्विवाह का पुनः प्रचलन आदि।

मोरिशस में कब से बलिदान दिवस मनाने का प्रचलन शुरू हुआ यह कहना निश्चय रूपेण कठिन है पर इतना कहना उचित होगा कि बलिदान २३ दिसम्बर १९२६ को याद करके लोगों के बीच में स्वामी जी द्वारा किये गये कार्यों को जनता के सामने प्रकाशित करना १९४० के उपरान्त शुरू हुआ होगा। तब से आज तक यह श्रावणी उपाकर्म जैसे एक पर्व के रूप में टापू भर मनाया जाता है।

इस साल मुझे तीन आर्य मंदिरों में उपस्थिति देकर श्रोताओं को सम्बोधित करने का मौका मिला। शनिवार ता० २१.१२.१३ को शाम के साढ़े चार बजे रोज़ हिल के त्रेफ़ आर्य मंदिर में बड़ी धूम-धाम से वह दिवस मनाया गया। कार्यारम्भ इलाके के पंडित-पण्डिताओं द्वारा सम्पन्न हुआ। भजन-कीर्तन के साथ भाषण हुआ। अन्त में दो सदस्यों के पुत्रों को सम्मानित किया गया। पहला था स्व० सुकदेव कोकिल जी का सुपुत्र और दूसरा था स्व० पंडित देरा के सुपुत्र। कतिपय समाज सेवकों को भी सम्मान का प्रमाण पत्र प्रदान किया।

रविवार ता० २२.१२.१३ को प्रातः ९.०० बजे लाल्वीज़ आर्य मंदिर में बलिदान दिवस मनाया गया जिसमें आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू, दूसरा उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम भी उपस्थित थे।

तीनों प्रधानों द्वारा ज्ञानवर्धक भाषण हुए जिन्हें सुनकर उपस्थित जनता ने खुशी ज़ाहिर की । आयोजन में चार चाँद लग गए जब शुरू में ही पंडित जयपति पुनित की पहल पर पुरोहित-पुरोहितों द्वारा स्वास्थ्य के लिए **'त्र्यम्बकम् यजामहे .....'** यजुर्वेद के प्रसिद्ध मंत्र से १०८ आहुतियाँ डाली गयीं ।

जयपति जी ने अन्त में अपने भाषण में इस प्रकार के यज्ञ के लिए माँग की।

सफलता की प्राप्ति

सफलता अपने आप नहीं मिलती है ।
अपितु इस को प्राप्त
करने के लिए संकल्प लेना पड़ता है,
तपस्या करनी पड़ती है,
भागना, दौड़ना पड़ता है,
भूखा, प्यासा रहना पड़ता है,
नींद, आराम छोड़ना पड़ता है
और अपमान भी सहन करना पड़ता है।

ओ३म् । असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः । तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ।।

पृष्ठ २ का शेष भाग

कृपया मुझे मन की शान्ति का उपाय बताइए। महात्मा बुद्ध ने धार्मिक पुरुष से पूछा – "क्या आप सफ़ाई में रहते हैं।"

व्यक्ति ने उत्तर दिया – 'महात्मा जी, मैं प्रतिदिन सुबह-शाम स्नान करता हूँ। स्वच्छ वस्त्र पहनता हूँ। मेरा घर भी चकाचक साफ़ रहता है। नौकर गाड़ी भी साफ़ करते हैं।'

महात्मा बुद्ध ने व्यक्ति से पुनः प्रश्न किया – 'आप अपने मन को कितनी बार धोते हैं?'

व्यक्ति निरुत्तर हो गया । महात्मा बुद्ध पूछते गए – 'क्या आप सुबह उठते ही मन का कचड़ा बाहर निकालते हैं? मन में किसी के प्रति कोई दुर्भाव तो नहीं। किसी के साथ पक्षपात तो नहीं कर रहे हैं न? क्या आप प्रत्येक संतान को समान दृष्टि से देखते हैं? मन के भीतर झाँकते रहिए, कहीं भी कोई अनुचित भाव दिखे तो उसे बाहर निकालिए । शान्ति मिल जाएगी। भीतर और बाहर प्रकाश आ जाएगा।'

सुख-शान्ति का प्रकाश प्राप्त करने का एक ही उपाय है – मन एवं आत्मा को साफ़-सुथरा रखना है। आत्मा को मैला करना ही आत्मा का हनन करना है और यजुर्वेद का मन्त्र कहता है – **ये के चात्महनो जनाः** – जो आत्मा का हनन करता है, – **असुर्य्या नाम ते लोकाः** - वे अंधकार से युक्त लोक को प्राप्त करता है।

संदेश स्पष्ट है हम ऐसा व्यवहार करें, जिस व्यवहार से लज्जा, भय और शंका का अनुभव न हो। जिस व्यवहार से हमें खुशी मिलती है, उसी प्रकार का व्यवहार हम दूसरों के प्रति करें। यही धर्म का मार्ग है।

त्रिओले आर्य समाज का समापन शताब्दी समारोह

१९१३-२०१३

त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज शाखा नं० ६० का शताब्दी समारोह शुक्रवार १५ मार्च २०१३ को तीन दिवसीय समारोह के साथ प्रारम्भ हुआ था। साल भर शताब्दी उत्सव मनाने के पश्चात् शुक्रवार ता० ६ दिसम्बर २०१३ को त्रिओले, तीन बुतिक आर्य मन्दिर में पूरी सफलता के साथ तीन बुतिक आर्य समाज का समापन शती समारोह पूरा हुआ।

६ दिसम्बर शुक्रवार का दिन था। सायंकाल पौने पाँच बजे भारत से आई हुई डा० उषा शर्मा जी के आचार्यत्व में स्थानीय पुरोहित-पुरोहिताओं द्वारा वेद मन्त्रों के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस समापन शती समारोह में भारत से आए हुए अनेक उच्च कोटि के विद्वान समाजसेवी और सन्यासी उपस्थित थे। राज्य सभा भारत के सांसद प्रो० रामप्रकाश जी जो इस समारोह के मुख्य अतिथि थे किसी कारणवश उपस्थित न हो सके। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप० सचिव श्री विनय आर्य ने उनका भी उपस्थित थे। उस अवसर पर एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी जिनमें सौ साल के मुख्य मुख्य कार्यों को पित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया था।

समाज के होनहार आर्य युवक श्री रोशन हरनोम जी बड़े उत्साह और खूबी के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे। सर्वप्रथम स्थानीय समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी ने अपने औपचारिक स्वागत भाषण के दौरान बीते सालों की एक सारगर्भित ऐतिहासिक झांकी प्रस्तुत की। अपने वक्तव्य के अन्त में प्रधान श्री हितलाल मोधू जी ने बताया कि इस समाज के एक आर्य परिवार में एक ऐसी उदार महिला है जिनका नाम श्रीमती वीणा नागा है। वो बेंक में काम करती है। तीन बुतिक आर्य समाज के कार्यों से वह प्रभावित होकर कोई दो ढाई साल से हर महीने अपने वेतन में से दो सौ रुपये त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज के बैंक आकाऊँट में डिपोज़िट करती है। इस साल २०१३ से उन्होंने यह राशि बढ़ा दी। श्रीमती जीना नागा जी की इस उदारता के लिए हॉल में उपस्थित सब लोगों ने ज़ोरदार तालियों से उनका सम्मान किया।

आर्य सभा के दोनों उप० प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी,आर्य रत्न, श्री सत्यदेव प्रीतम जी,आर्य रत्न और मान्य-प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर जी,आर्य भूषण, पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला समिति के मन्त्री और अन्तरंग सदस्य – श्री जयचन्द लालबिहारी, प्रधान पाम्प्लेमुस आर्य ज़िला परिषद्, श्री गिरजानन्द तिलक जी, हिन्दी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति जी और समस्त उपस्थित जनों के मध्य में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप० सचिव श्री विनय आर्य जी के कर कमलों से पट का अनावरण हुआ। इस के तुरन्त बाद अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में भारत से आए हुए सन्यासी स्वामी धर्म देव जी के कर कमलों द्वारा स्मारिका पत्रिका का विमोचन हुआ। याद रहे स्मारिका का सम्पादन आर्योदय के सह-सम्पादक सत्यदेव प्रीतम ने किया। स्मारिका वितरण के पश्चात् भारत से आए हुए अतिथि गणों में से श्री० श्री० आचार्य सनतकुमार जी, आचार्य देव शर्मा जी, डा० ओ.पी. अग्रवाल जी, श्री विनय आर्य जी, स्वामी धर्म देव जी और डा० राजसिंह शिकारा जी ने बारी बारी से पाँच पाँच मिनट के सन्देश सुनाए। इसके बाद आर्य सभा की ओर से डा० उदयनारायण गंगू जी और श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने अपना सन्देश सुनाया। अन्त में डा० रुद्रसेन निऊर जी ने आर्य सभा की ओर से सब को धन्यवाद दिया। तुरन्त समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी ने धन्यवाद देते हुए रात्रि भोज के लिए सब लोगों को निमन्त्रित किया। शान्ति पाठ के बाद रात्रि भोज के साथ साल भर उत्सव मनाते हुए सौ साल का यह समापन शती समारोह भारी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आने वाली पीढ़ियों के लिए यह विवरण यादगार के रूप में हमेशा याद दिलाता रहेगा।

गतांक से आगे

मन का स्वभाव

स्वामी विष्वङ्

यदि मन सत्व प्रधान वाला है, तो सत्व नामक तत्त्व का स्वभाव मन में अधिक होना चाहिए। सत्व का स्वभाव है शान्त रहना। मन का स्वभाव भी शान्त होना चाहिए न कि चंचल। परन्तु लोक में सबको मन चंचल ही दिखता है, ऐसा क्यों? मन तीनों (सत्व, रज, तम) पदार्थों से बना है, इसलिए मन में तीनों का स्वभाव रहेंगे। परन्तु सर्वाधिक स्वभाव शान्त होने का रहेगा क्योंकि सत्व की अधिक मात्रा है। मन के तीनों स्वभाव मन में ही हैं, परन्तु तीनों स्वभाव अपने आप प्रवृत्त नहीं होते हैं, क्योंकि जड़ होने के कारण। उन तीनों स्वभावों में से कौन से स्वभाव को कार्यान्वित करना है, यह जीवात्मा के ज्ञान के अनुसार निर्भर करता है। अविद्या से युक्त आत्मा मन को चंचल बनाकर कार्य करता है। विद्या से युक्त आत्मा मन को शान्त बना कर कार्य करता है।

मन का चंचल बना रहना या मन का शान्त बना रहना जीवात्मा के अज्ञान व ज्ञान पर निर्भर करता है। यह यथार्थता है। यदि मन के स्वभाव के विषय में प्रश्न किया जाये कि मन का क्या स्वभाव है? उत्तर यह ही होना चाहिए कि मन का स्वभाव शान्त है। फिर चंचल क्यों दिखाई देता है? इसका उत्तर मनुष्य का अज्ञान है और अज्ञान को हटा कर देखे तो मन शान्ति ही दिखाई देगा। इसलिए मन का स्वभाव चंचल न हो कर शान्त है, ऐसा ही कथन करना चाहिए, यह ही महर्षि पतञ्जलि एवं महर्षि वेदव्यास का कथन है, ऐसा मानना चाहिए ।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

***प्रेषक* – श्री हरिदेव रामधनी, *आर्य रत्न*, मन्त्री आर्य सभा मॉरीशस**

त्रिदिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल सूयाक में त्रिदिवसीय ब्रह्मचर्य यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई २५.१२.२०१३ को प्रातः ९.३० बजे से १२.०० बजे तक। पहली बार चार पंडिताओं को यज्ञ ब्रह्म के रूप में वरण किया गया था। उक्त यज्ञ में भाग लेने के लिए टापू भर के यज्ञ प्रेमियों की अच्छी उपस्थिति थी। पहली बार इतने बच्चों को न केवल विशाल यज्ञवेदी पर आसन दिया गया वरन बच्चों की ओर से चारों वेदों के चुने हुए पाँच मंत्रों के उच्चारण के बाद आहुतियाँ दी गईं । सभी बच्चे सावान एवं ब्लाक रिवर ज़िलों के विभिन्न सखा समाजों से आये थे। उन बच्चों को वेद के शुद्ध मन्त्रोच्चारण सिखाया जा रहा है। यह स्तुत्य कार्य आचार्य बितूला की ओर से हो रहा है। न केवल बच्चे वेद मंत्रों को ठीक रीति से सीख रहे हैं, बल्कि वयस्क जन भी आचार्य उमा एवं आचार्य बितूला से सीख रहे हैं। यज्ञ के दौरान उन सभी बच्चों और प्रौढ़ लोगों का परीक्षण भी लिया गया।

यज्ञ पूर्णाहुति का स्तर और बढ़ गया जब वर्तमान सभा प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर ने सपत्नीक यज्ञ में यज्ञमान की तरह बैठे। सभा के उपप्रधान और बासदेव विष्णुदयाल ट्रस्ट फण्ड के प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम का सारगर्भित भाषण भी समारोह के अन्त में हुआ। भाषण के अन्त में भरा हुआ सूयाक का उपकेन्द्र सराहना पूर्ण तालियों की गड़गराहट से गूँज उठा। तत्पश्चात् सभा प्रधान श्री तानाकूर का भी प्रेरणा पद भाषण हुआ।

पुरोहित-पुरोहिताओं की इतनी अधिक संख्या देखते हुए मन में ऐसा भान हो रहा था कि वह कोई पुरोहित मण्डल द्वारा आयोजित यज्ञ था।

३०-३५ समाज के लोगों व बच्चों को 'गिलोय' के अंकुरित पौधे बाँटे गए। उन सभी से माँग की गई कि वातावरण को शुद्ध एवं हरा बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए। गिलोय वा अन्य आयुर्वेदिक औषधी को प्रयोग में लाने की स्वामी रामदेव जी की माँग की पुष्टि की गई। गिलोय के सारे पौधे प्वेंत ओ पौमाँ निवासी रामनोथ जी सवारी के साधन भर के लाए थे।

ब्लॉक रिवर ज़िले के बाम्बू गाँव के समाज के सदस्य-सदस्या, आचार्य बितूला जी की पत्नी की ओर से रोचक भजन पेश किए गए। तबले पर संगत किया किशोर योमन बितूला ने। लोगों ने कार्यक्रम को खूब सराहा।

आज के बच्चे कल के नौजवान होंगे। हम रोते हैं कि नौजवान हमारे साथ नहीं आ रहे हैं। आखिर हम उन्हें लाने के लिए क्या कर रहे हैं ?

कार्यक्रम में, यज्ञ के बाद, एक शोभा यात्रा भी सम्मिलित की गई थी जिसमें श्रद्धालु भक्तों ने हाथ में ओ३म् के झण्डे लिए गाँव का चक्कर लगाया।

संगीत प्रतियोगिता २०१३

बिसनुदेव बिसेसर

ज़िन्दगी के हर पल को रंगीन बनाने का एक आधार संगीत साधना है। जो सामवेद से प्रारम्भ होकर आज तक फैलता आ रहा है।

पंजीकरण की एक शताब्दी के स्वर्ण अवसर से लाभ उठाकर आर्य सभा के तत्वावधान में संगीत समिति ने एक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया। हम भाषण देने के अलावा भजन भी करते हैं। इस महान् कार्यक्रम को सफल बनाने में वेद प्रचार के प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी, सभा प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी तथा सभा मन्त्री श्री हरिदेव रामधनी जी का बहुत बड़ा सहयोग रहा।

१४ दिसम्बर २०१३ को लगभग एक बजे मोहनलाल मोहित भवन खचाखच भरा हुआ था। १६ टोलियों में से १३ टोलियाँ अपने १०-१५ कलाकारों को लेकर पहुँच चुकी थीं। इसके अलावा कई श्रोता, भारत के आचार्य, कई फ़ोटोग्राफ़र तथा एम.बी.सी के लोग भी मौजूद थे। साथ में निर्णायक मण्डल के श्री इन्द्रदत्त दीरपोल जी, श्री विशाल मंग्रू जी तथा श्रीमती ललिता गोबीन जी भी उपस्थित थे।

प्रतियोगिता का शुभारम्भ भारत के आचार्य जितेन्द्र जी और आचार्य सतीश बितुला जी द्वारा मन्त्र-पाठ हुआ। पंडिता सत्यम चमन जी ने संचालन करते हुए कहा कि प्रधान विष्णुदेव बिसेसर जी १२ वर्षों तक अन्तरंग सदस्य रहे। परिषद् का प्रधान एवं मन्त्री का पद आज तक सम्भालते रहे। वे गाते, लिखते और साज़ बजाते भी है।**क्रमशः**

MAKAR SANKRANTI & ITS SIGNIFICANCE

By Sookraj Bissessur

The main local event of Makar Sankranti's celebration has now gone global, or at least acquired an international dimension. Uttarayana, the festival, which coincides with Makar Sankranti January 14 and 15 every year brings old neighborhood of Gujarat alive with the flutter of kites. Started in 1989, this festival has eventually attracted kite flyers from countries as diverse as Ukraine and France who fly to India to enjoy the experience as well as to contribute their elaborate Creations in order to add an extra dimension to kite-flying festival.

Quite earlier, Uttarayana was a celebration of the harvest season and a veneration to the sun. But even today the traditional celebration can be seen in crowded areas of Ahmedabad, Vadora, Surat and other urban centres of Gujarat. Come January and the preparations go in full swing. Children bring a whiff of excitement as they do spend their spare time practicing for the big day. "Manjhas" – cotton threads coated with glass, rice paste, chemicals and other abrasive material to give them the tensile power and strength and that cutting edge – are prepared in every street corner, then rolled on spools called 'Firkis'. Artisans make the kites, utilizing paper and bamboo.

In fact, Makar Sankranti is a festival based on astronomy. It usually falls on January 14th, every year. Many indulge in the erroneous belief that Sankranti augurs the new year of Hindus. In virtual reality the Panchang (Indian Calendar) states that the New Year starts on Chaitra Pratipada or Yugadi – festival which marks the creation of the universe. Chaitra is the first month of the Indian Calendar and Pratipada is the first day of the month.

Makar is a zodiac sign and Sankranti means evolution/movement. Primitive India is famous for its eminent astronomers who explored the milky way and other constellations. They were among the first to confirm and affirm that the earth revolves round the sun, from one Rashi (Zodiac sign) to another. When the revolution starts on Capricorn, the festival of Makar Sankranti is celebrated. The earth revolves for thirty days in this Rashi.

There is one Sankranti in each of the twelve Rashis annually. The twelve Rashis have been named as follows – Mesha (Aries), Vrish (Taurus), Mithun (Gemini), Karka (Cancer), Singh (Leo), Kanya (Virgo), Tula (Libra), Vrishchick (Scorpion), Dhanu (Sagittarius), Makar (Capricorn), Kumba (Aquarius) and Mina (Pisces). Why is it that only Makar Sankranti is celebrated?

Makar Sankranti marks the shift from Dakshinayam to Uttarayana, a period of intensive light. Makar Sankranti is celebrated to mark the saur varsha (Solar Year). Sages have prescribed prayers to celebrate festivals. Rejoicing comes later. The Veda states thaht GOD (the Supreme Creator, Operator and Dissolver of the universe), through his power controls the sun, the very wheel of time. He controls each and every minute, hour, second, day, week, fortnight, month, year and season. He is the only one worthy of worship.

Makar Sankranti relates to the sun and the movement of the earth. The grace of God is invoked through fervent prayers so that everyone may be blessed with a good and favourable time; a time without excessive heat or cold.

Many seize this opportunity to indulge in various practices. A bathing at the confluence of the rivers -- Ganga, Yanuma and the invisible Saraswati in Allahabad at the very crack of the dawn on Makar Sankranti.

The use of sesame in savouries is another popular event. Wearing new clothes and spending the whole day to visit family members, friends and relatives.

Sankranti is also known as the "Khichri" festival in the north of India. 'Khichri' and sesame, including sweet meals energise the whole body. Families also remember those who have left the fold and assert new ties with others within the network of social and economic relation. It is customary in some regions to offer gifts to parents, friends and relatives on this auspicious occasion.

In certain regions of India the veneration of cows is a main feature in the celebration of Makar Sankranti. Bulls and cows are properly washed and their horns painted. Decorated with beautiful and fascinating flower garlands and tinkling bells, these animals are then taken out in the villages.

Kite flying is another feature (as already pointed out at the very outset of this article). The brilliant colours signify hope, its size in relation to the sky epitomizes and symbolizes the minuteness of man in front of the Almighty and its thread reminds us that the rope of our life is being controlled by the Almighty God. If he lets go the rope (stop holding), we will most surely and certainly meet our end. In this very context – William Shakespeare has so aptly and appropriately pointed out :--

As flies to wanton boys
Are we to God. God kills
Us for his sport.

By way of conclusion it goes without saying that festivals are not just feasts and worship. They do also act as social cement which brings people together in total harmony and strengthen brotherhood, love, peace, mutual respect and mutual understanding. The close observance of festivals has always symbolized and epitomized the fundamental values of life. Festivals are also happy occasions that enrich social life. Their celebrations also rejuvenate congenial relationship within the family and society.

Makar Sankranti is also loaded with multifarious messages. If one understands its messages one's life will be more meaningful.

Happy and Joyful Makar Sankranti to one and all!

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम,*
आर्य भूषण, आर्य रत्न
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038